मेहनतकशों का पैग़ाम — मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha1987@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

- रोडवेज का चक्का जाम होने के बाद दिया वेतन, यात्री रहे परेशान, सरकार को घाटा अलग से — 3
- देश में दलालों की मीडिया-सरकार जुगलबंदी — 4
- सरकारी बैंकों में पैसा नहीं, सरकार का झूठ जमा है — 5
- क्लब सदस्यों ने मंत्री विपुल को दिखाया जिमखाना का गंदखाना ! — 8

वर्ष 31 अंक -13 फ़रीदाबाद 25-31 मार्च 2018 फ़ोन : - 9999595632 ₹ 2

मंत्री कृष्णपाल गूजर के गांव पर 11 करोड़ का बिजली बिल बकाया

सरचार्ज माफ़ी के बावजूद कोई रिकवरी नहीं, 20 लाख की बिजली रोज़ाना चोरी

फ़रीदाबाद (म.मो.) स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर के गांव में कुल 502 बिजली कनेक्शन हैं। इनमें से 331 डिफ़ाल्टर हैं। ये लोग न तो बिजली का बिल भरते हैं और न ही कनेक्शन काटने देते हैं। यदि बिजली वाले थोड़ी हिम्मत जुटा कर कनेक्शन काट भी जायें तो कोई परवाह नहीं। कुंडी कनेक्शन जिन्दाबाद।

बिजली विभाग ने डिफ़ाल्टरों के सामने सरेंडर करते हुए पूरे गांव को एक स्कीम दी है कि जो डिफ़ाल्टर बिजली का बिल भर देंगे उनका सरचार्ज यानी ब्याज-जुर्माना आदि सब माफ़ कर दिया जायेगा। कटा हुआ कनेक्शन भी बिना किसी जुर्माने के तुरन्त जोड़ दिया जायेगा। लेकिन इस घोषणा के बावजूद भी कोई बिल भरने नहीं आ रहा।

बिल भरने कोई आये भी क्यों? जब सैयां भये कोतवाल तो डर काहे का। यानी जब उनमें से ही एक कृष्णपाल भारत सरकार का मन्त्री हो गया है तो फ़िर बिल किस बात का? जब मंत्री का मामा बरसों तक इतनी बड़ी पुलिस टक्साल बेरोक-टोक चला सकता है तो क्या उन्हें बिजली जैसी मामूली चीज़ की चोरी का भी हक नहीं है? जाहिर है यही वह तर्क और ताकत है जिसके बल पर रोज़ाना यहां 20 लाख रुपये की बिजली चोरी हो रही है।

इस चोरी को बिजली विभाग पकड़ने या रोकने की बजाय लाइन लॉस में दिखा रहा है। मजे की बात तो यह है कि जब कभी, यदि बिल जमा भी होने लगे तो चोरी की इस बिजली का कोई हिसाब नहीं जुड़ेगा। यानी इसकी कोई रिकवरी नहीं होने वाली। चोरी गयी इस बिजली को विभाग पहले दिन से ही बट्टे खाते में डाल कर चल रहा है।

बिजली अधिकारियों पर मन्त्री कृष्णपाल का खौफ़ इतना जबरदस्त है कि वे खुले आम हो रही बिजली की इस चोरी के विरुद्ध थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने की भी हिम्मत नहीं जुटा पा रहे। हां चोरी रोकने के लिये, खंबों पर चल रही बिजली की नंगी तारों की जगह भूमिगत केबल बिछाने की बात जरूर सोची जा रही है। लेकिन जिन्होंने चोरी करने की ही ठान रखी है वे भूमिगत केबल से भी करेंगे जैसे पेट्रोल की पाइप लाइनों से लोग चोरी करते हैं। विदित है कि इन बिजली चोरों की वजह से होने वाले घाटे को सरकार उन बिजली उपभोक्ताओं से अतिरिक्त वसूली करके पूरा कर लेती है जो शरीफ़ हैं और नियमित रूप से समय पर बिजली का बिल भर देते हैं।

विदित है कि खट्टर सरकार ने गत लगभग एक वर्ष से बिजली विभाग का जिम्मा पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी (एडीजीपी) शत्रुजीत कपूर को सौंप रखा है। उन्हें इस विभाग का चेयरमैन व प्रबन्ध निदेशक गया है। अब तक यह पद वरिष्ठ आईएएस अधिकारियों के कब्ज़े में रहता आया है। पहली बार किसी पुलिस अधिकारी को इस महत्वपूर्ण पद की कमान सौंपी गयी है। संभवत: भ्रष्टाचार एवं बिजली चोरी के चलते लगातार घाटे के दलदल में फ़ंसते जा रहे इस विभाग को तारने के लिये उन्हें यह विभाग सौंपा गया।

कपूर के आने से इस विभाग ने क्या खोया क्या पाया इसके आंकड़े तो फ़िलहाल उपलब्ध नहीं है; परन्तु उनके होते हुए मात्र एक गांव में विभाग के 11 करोड़ तो फ़ंसे हुए हैं सो हैं, 20 लाख की वह बिजली भी चोरी हो रही है जिसकी कोई रिकवरी नहीं होनी। अपनी बकाया राशि प्राप्त करने के लिये जिस तरह बिजली विभाग इस गांव वालों के सामने नतमस्तक होकर लम्बा लेटा हुआ है उससे तो यही लगता है कि शत्रुजीत कपूर ने गूजर जैसे के आगे घुटने टेक दिये हैं।

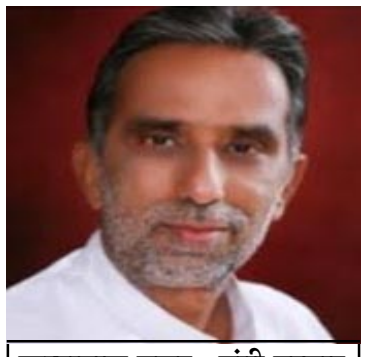

कृष्णपाल गूजर : मंत्री दरबार

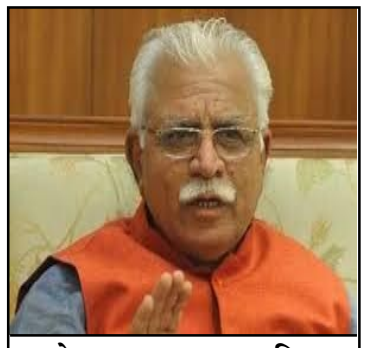

मनोहरलाल : डाला हथियार

शत्रुजीत कपूर : सीएमडी लाचार

करने की नीयत हो तो अकेला ही काफ़ी होता है

कहने को पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी शत्रुजीत कपूर कह सकते हैं कि जहां सारा ही सिस्टम बिगड़ा पड़ा हो तो वहां वे अकेले क्या कर सकते हैं? अकेला क्या कर सकता है, इसका उदाहरण इसी सप्ताह बल्लबगढ की शिवशारदा कॉलोनी में एक कनिष्ठ पुलिसकर्मी के रूप में देखने को मिला।

क्षेत्र की पुलिस चौकी के इंचार्ज जगबीर सिंह एस.आई. को सूचना मिली कि एक प्लॉट में अवैध रूप से बोरिंग की जा रही है। वे तुरंत मौके पर पहुंचे। कार्यवाही शुरू करते, इससे पहले मंत्री कृष्णपाल गूजर के पीए का फ़ोन आ गया कि बोरिंग करने वाले उनके आदमी हैं लिहाजा उन्हें न रोका-टोका जाय, जगबीर नहीं माने तो उन्हें देख लेने की धमकी तक पीए साहब ने दे डाली। जवाब में जगबीर ने भी करारा जवाब देते हुए मौके पर आने को कहा। साथ ही, बाद पुलिस कार्यवाही करते हुए दोषियों को गिरफ़्तार व बोरिंग मशीन तथा अन्य सामान जब्त कर थाने में जमा करा दिया।

इसी तरह करीब 3-4 माह पूर्व थाना तिगांव के एक एएसआई प्रेम सिंह ने अपने एसएचओ व तत्कालीन सीपी हनीफ़ कुरैशी की परवाह न करते हुए कर्त्तव्य का सही ढंग से पालन करते हुए मंत्री गूजर के मामा श्री के रेत खनन का भांडा कतई चौड़े में फ़ोड़ दिया था।

कपूर साहब, ऐसे ही लोगों को देख कर मशहूर कवि दुष्यंत ने कहा था कि कौन कहता है कि आसमान में छेद नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।

मोदी सरकार के चार साल में रेल सेवा हुई बेहाल: साढे तीन माह बाद ट्रेनें लौटीं पटरी पर

फ़रीदाबाद (म.मो.) गोदी मीडिया के माध्यम से जनता अच्छे दिनों के सब्ज़ बाग़ दिखाने वाली भाजपाई मोदी सरकार ने देश भर की रेल सेवा का जो बेड़ा ग़र्क किया सो किया, दिल्ली-फ़रीदाबाद-पलवल शटल सेवा तो लगभग समाप्त ही कर दी। अब साढे तीन माह बाद इन ट्रेनों के पटरी पर दर्शन हुये हैं।

दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में धुंध एवं कोहरे के नाम पर एक साथ 9 शटल और इन्टरसिटी रेल सेवा बिल्कुल बन्द कर दी। देखने वाली बात तो यह है कि धुंध से तथाकथित रुकावट केवल इन्ही लोकल ट्रेनों को आ रही थी। तमाम बड़ी गाड़ियां- राजधानी, शताब्दी, सुपर फ़ास्ट आदि सभी गाड़िया लगभग ज्यों की त्यों चलती आ रही हैं।

दरअसल धुंध का तो बहाना था। सभी जानते हैं कि इन सर्दियों में धुंध के दर्शन तो बस नाम मात्र को ही 2-4 दिन के लिये हुए थे। असल समस्या रेल विभाग के अस्त-व्यस्त तथा भ्रष्टाचार ग्रस्त सिस्टम की है। सुधी पाठक भूले नहीं होंगे कि वर्ष 2017 के अन्तिम महीनों में एक के बाद एक रेल दुर्घटनायें हो रही थी जिनका मुख्य कारण रेलवे ट्रेक की देखभाल में कोताही बरतना था। फ़रीदाबाद वाली लाइनों पर भी कई बार ट्रेन पटरी से उतरी थीं। बहुत शोर मचने पर जांच में पता चला कि पटरी की 80 प्रतिशत फ़िश प्लेट ढीली अथवा बेकार थी। इनके कारण पटरी असुरक्षित हो चुकी थी।

पाठक याद करने की कोशिश करें कि पिछले चार सालों से लगातार कभी सिग्नल सिस्टम को ठीक करने तो कभी लॉकिंग या अनलॉकिंग के नाम पर महीनों तक शटल ट्रेनों को बंद रखा जाता रहा है। ट्रेनों के भारी आवागमन के चलते मौजूदा तीन ट्रैक बहुत कम पड़ने लगे थे तो 7 वर्ष पूर्व चौथी लाइन डालने का काम शुरू हुआ जो आज तक भी पूरा नहीं हो पाया। आगामी एक वर्ष में भी पूरा होता नहीं दिख रहा है। इसके लिये रेलवे झुग्गी वासियों को दोषी ठहराता है जबकि असली दोषी खुद रेल विभाग है।

चौथी लाइन जहां से गुजरनी है वहां रेलवे स्टेशन की बिल्डिंग खड़ी है जिसे तोड़ा जाना जरूरी है, तोड़ी वह तब जायेगी जब नई बिल्डिंग बन जाये जो गत 4 वर्षों से अधूरी बनी खड़ी है। इसके बनाने वाले ठेकेदारों की करीब 250 करोड़ रुपये की पेमेंट रेलवे द्वारा न किये जाने पर वे काम छोड़ गये थे। कहते हैं कि अब किसी नये ठेकेदार को फ़ास कर लाया गया है, देखो वह कब तक काम पूरा कर पायेगा।

विदित है कि इन्टरसिटी, कोसी पैसेंजर व शटल ट्रेनों द्वारा यात्रा करने वाले वे दैनिक यात्री होते हैं जिन्हें रोज़ काम पर आना-जाना होता है। ओल्ड फ़रीदाबाद, एनआईटी, बल्लबगढ, असावटी व पलवल से तकरीबन 25000 ऐसे दैनिक यात्री हैं जिन्होंने मासिक अथवा त्रैमासिक टिकट खरीदे हुए हैं। यानी इन लोगों से रेलवे ने एडवांस भाड़ा ले रखा है जिसके बदले सेवा देना रेलवे के लिये अनिवार्य है। अपने इस वायदे को तोड़ कर रेल विभाग लगातार आपराधिक कार्य करता आ रहा है। यदि यही काम कोई प्राइवेट ट्रांसपोर्टर करता तो थाने में मुकदमा दर्ज हो जाता, परन्तु यहां तो सैयां भये कोतवाल तो डर काहे का।

सबसे दुर्भाग्य की बात तो यह है कि स्थानीय सांसद एवं केन्द्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर मोदीगान व नारियल फ़ोड़ने की बजाय थोड़ा ध्यान इन यात्रियों की ओर भी दे लेते तो क्या हर्ज था? मोदी लहर में, अच्छे दिनों का भरोसा दे कर सांसद बने गूजर से लोगों को उम्मीद थी कि इस रूट पर पहले से ही कम चल रही शटल गाड़ियों की संख्या बढेगी; परन्तु क्या पता था कि जुमलेबाज़ों की यह सरकार चली चलाई ट्रेनों को भी रद्द कर देगी। कोई बात नहीं आगामी चुनाव अब बहुत दूर नहीं रह गया है, तब हिसाब बराबर हो जायेगा।

दु:खद

'मज़दूर मोर्चा' के 30 वर्ष पुराने साथी राम प्रकाश कपूर नहीं रहे!

28 फरवरी 1949 - 19 मार्च 2018

सदैव संघर्षरत रहने वाले साथी कपूर दुनिया से कभी नहीं हारे, परन्तु दिनांक 19 मार्च को वे मौत से हार गये। हलद्वानी-नजीबाबाद सड़क पर हुई दुर्घटना ने उन्हें हमसे छीन लिया। 'मज़दूर मोर्चा' सदैव उनके सहयोग का आभारी रहेगा।

स्वर्गीय कपूर ऐसे सेनानी थे जो किसी सेना की प्रतीक्षा में समय बर्बाद न करके अकेले दम पर ही अन्याय से भिड़ जाते थे। कौन भूल सकता है कि स्टेट बैंक की नौकरी के दौरान प्रबंधन की धींगा मुश्ती के खिलाफ अकेले ही बैंक के बाहर धरने पर बैठ गये और प्रबंधन को सीधे रास्ते पर ले आये।

पिछले दिनों अपने साहूपुरा (बल्लबगढ़) निवास के दौरान आरटीए द्वारा वाहनों की पासिंग के लिए पूरी सड़क को जाम कर देने के विरोध में उन्होंने अकेले दम सड़क पर धरना देकर आरटीए व जिला प्रशासन को सिखा दिया था कि वे वाहन पासिंग के नाम पर जनता के आने-जाने वाली सड़क जाम नहीं कर सकते। वहां से रोजाना गुजरने वाले हजारों लोगों ने उनका लोहा माना और धन्यवाद दिया। ऐसे शूरवीर योद्धा थे हमारे कपूर भाई।